# भारतीय फ़िल्म और टेलीविज़न संस्थान,पुणे

## फ़िल्म अभिनय विभाग

## हिंदी मोनोलॉग - ( पुरूष / MALE )

जी हाँ, मैंने काले बाज़ार का धंधा किया, जी हाँ ,मैंने लोगों का अधिकार छीना है। जब लोग भूख से मर रहे थे , तो हम उनके हिस्से का अनाज ऊँचे दामों में बेचकर अपने गल्ले भर रहे थे। जब शहर में बीमारी फैल चुकी थी , हमने दवाइयाँ छुपा दीं और उनके दाम बढ़ा दिये। फिर जब हमें मालूम हुआ कि पुलिस गोदाम पर छापा मारने वाली हैं, हमने वही दवाइयाँ गंदे नाले में फिकवा दीं। मेरे जिस्म से सड़ी हुई लाशों की बू आती है, मेरी हर साँस से बिलख़ते हुए बच्चों की सिसकियाँ सुनाई देती हैं। बाबू ठीक कहता था , मैं इंसान नहीं ख़ूनी दरिंदा हूँ। क्योंकि जिन दवाइयों की बाबू को ज़रूरत थी , उनका ढेर हमारे गोदाम में पड़ा था, मगर बाबू के पास दवाई ख़रीदने के पैसे नहीं थे। वो मर गया , मेरा भाई मर गया।

मैंने बाबू की मुहब्बत का ये सिला दिया, कि अपने ही हाथों से अनजाने में उसका गला घोंट दिया। मेरे इन नापाक हाथों में बाबू का पाक खून लगा है। ये दाग़ ये धब्बे कभी नहीं धुल सकते। मेरे माथे पर लगा कलंक कभी नहीं मिट सकता। मुझे जैसे ज़लील आदमी के लिए आपके कानून में शायद ही कोई सज़ा हो।

मेरे साथियों के नाम और पते मेरे पास हैं। वो भी मेरी तरह क़ातिल और मुजरिम हैं। लेकिन मैं इस ज़मीन पर रहने लायक नहीं, इंसानों में रहने और इंसान कहलाने का कोई हक़ नहीं। मेरा गला घोंट दो, मुझे दहकती हुई आग में फ़ेंक दो। मेरी लाश को शहर की गलियों में फिकवा दो, ताकि वो ग़रीब,वो बेसहारा, जिनका मैंने लोगों के साथ मिलकर अधिकार छीना है, वो मुझपर थूँकें, अपनी ठोकरों से मुझे रौंद डालें।